✻ श्रीसर्वेश्वरो विजयते ✻ ✻ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ✻

आचार्यपञ्चायतन-स्तवनम्

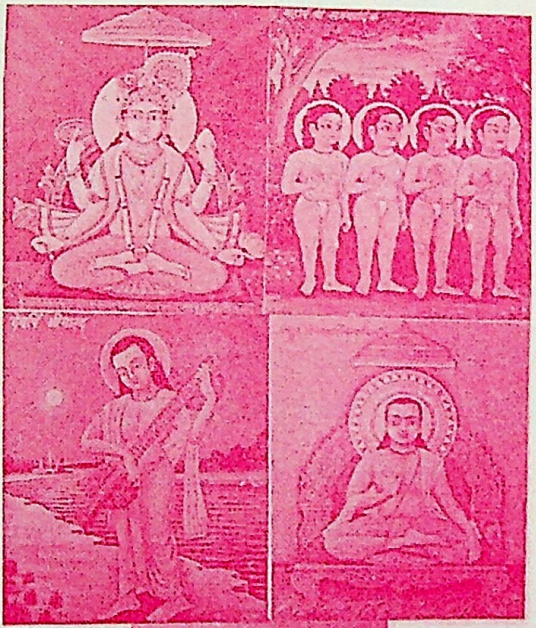

श्रीहंसं
सनका-
दींश्च
देवर्षिं
नारदं
हृदा ।

श्री-
निम्बार्कं
निवासञ्च
नमामि
मनसा
गिरा ।।

रचयिता-अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

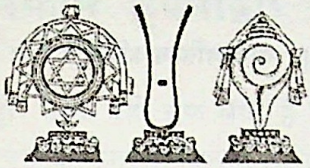

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-

श्री श्रीजी महाराजः

प्रकाशक--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

निम्बार्कतीर्थम् (सलेमाबाद)

किशनगढ़, अजमेर-(राजस्थानम्)

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-महोत्सवः

वि० सं० २०५८ श्रीनिम्बार्काब्दाः ५०९७

* श्रीराधासर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

श्रीहंसं सनकादींश्च देवर्षिं नारदं प्रभुम् ।
श्रीनिम्बार्कं निवासाऽर्च्यं नितरामभिवादये ॥१॥

परमाचार्यपञ्चायतनस्तवनमिष्टदम् ।
समर्प्यते मया भक्त्या गृह्णन्तु देशिकोत्तमाः ॥२॥

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-महोत्सवः
सोमवासरः वि० सं० २०५८
दिनांकाः १३/८/२००१

आचार्यपञ्चायतनपदपङ्कजपरागकामः--
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

✻ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✻

स्वकीय हृदयोद्गार

जीवन का वही समय वही क्षण श्रेष्ठ है जिसमें सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु का स्मरण-चिन्तन हो जाय । **हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्** श्रीहरि के स्मरण मात्र से सभी बाधाओं का परिशमन एवं परिहार हो जाता है और अखण्ड सुख के स्वरूप का विवेचन करते हुए श्रीहरि ने उपदेश किया है--

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥

जिनका पूर्ण दृढ निश्चय है ऐसे अनन्य भक्तों द्वारा मेरा अनवरत नाम, गुण, कीर्तन होता है तथा मुझे प्राप्त हेतु प्रयत्नशील रहते हैं एवं मेरे को ही प्रतिपल नमन करते हुए ध्यान-चिन्तन में सतत प्रवृत्त हैं और मेरी ही अनुराग पूर्वक उपासना में सदा निरत हैं ।

वस्तुतः ऐसे भक्तों के लिए वे सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर यहाँ तक अनुग्रह करते हैं--

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥

कैसा भी दुराचार परायण मेरा भक्त मुझे अनन्य निष्ठ होकर भजता है तो वह उत्तम साधु पुरुष होने का अधिकारी है और वस्तुतः वह दृढ निश्चयवान् है क्योंकि उसने यह यथार्थ समझ लिया है कि उन सर्वेश्वर की आराधना के बिना अन्य कोई अवलम्ब नहीं । ऐसा भक्त तत्काल ही धर्मात्मा स्वरूप हो

जाता है और असीम शान्ति की अनुभूति करता है । हे कुन्तिपुत्र अर्जुन ! यह निश्चयात्मक सत्य समझो कि मेरा वह भक्त कभी विनाश को प्राप्त नहीं होता ।

वस्तुतः वे अकारणकरुणावरुणालय श्रीराधासर्वेश्वर अनवरत अपने प्रपन्नजनों को निर्हेतुकी कृपा कादम्बिनी के रस वर्षण से परितृप्त करते हैं । उन्हीं परमानन्दकन्द सर्वेश्वर श्रीगोविन्द एवं उनके ही अनुग्रह विग्रहस्वरूप इन पूर्वाचार्यचरणों के कृपा प्रसाद रूप ही इस स्तवन की प्रस्तुति संभव हो सकी है ।

शारीरिक अत्यधिक अस्वस्थता की इस कष्टमयी वेला में यह सेवा कैसे बन पड़ी यह तो वे सर्वान्तर्यामी श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु ही जाने । यद्यपि आज से ६ वर्ष पूर्व १५ इञ्चरूपात्मक लम्बायमान शल्य चिकित्साजन्य आन्त्राघात (हरनिया) और तज्जन्य वामवृक्क की निष्क्रियता आदि शरीरगत इन उपद्रवों से आक्रान्त तो थे ही परन्तु अभी मास त्रय पूर्व दो बार हृदयाघात के उपद्रव ने शरीर को और भी जर्जर कर दिया । फलस्वरूप भ्रम (चक्कर) का होना उदराध्मान उदावर्त शर्करा-स्वल्पता आदि व्यतिक्रमों से विविध बाधाओं का आवागमन यह वार्द्धक्य आयुगत धर्म भी स्वाभाविक स्थिति है, उसमें भी जन्मान्तरीय अथवा इह जन्मोद्भव कर्मविपाकरूप से जो भी अस्वस्थता हो वह स्वाभाविक है, इन सब वैपरीत्य में श्रीसर्वेश्वर कृपा प्रसाद तो साथ में है ही और जब उनके समाश्रित शरणापन्न हैं तो फिर भय किस बात का वे अनन्तकृपाकोष जैसा उचित समझें अपने अनुग्रहकटाक्ष से परमानन्द प्रदान करेंगे ही ।

इस प्रस्तुत श्रीहंससनकादि-नारद-निम्बार्क-निवासाचार्य-पञ्चायतन स्तवन का अति संक्षेपात्मक रूप से जैसा भी संभव हो सका परम भागवत रसिक भगवज्जनों के समक्ष में प्रकाशित (मुद्रित) है । यदि भावुकजनों ने इसके पठन-मनन से यत्किञ्चित् भी लाभ लिया तो यह लेखनी सार्थक होगी ।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-
श्री श्रीजी महाराज-
विरचितम्--

आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्

सर्वेश्वरं हृदा वन्दे श्रीराधामाधवं प्रभुम् ।
वृन्दावननिकुञ्जस्थं यमुनातटशोभितम् ॥१॥
हंसस्वरूपसर्वेशं जगत्कारणकारणम् ।
सनकादिस्वकाचार्यं वन्दे देवर्षिनारदम् ॥२॥
परमाचार्यनिम्बार्कं श्रीसुदर्शनरूपिणम् ।
सर्वेश्वराऽर्चने हृद्यं श्रीमज्जगद्गुरुं भजे ॥३॥
शरणं बालकृष्णञ्च देवाचार्यं दयानिधिम् ।
मामकीनं गुरुं वन्दे कृपावत्सलमद्भुतम् ॥४॥
आचार्यपञ्चस्तवनं वरेण्यं सदाऽवधेयं निजहृत्प्रदेशे ।
युष्मत्प्रसादाद्रचयामि भक्त्या सर्वार्थदं सर्वसुखैककोषम्॥

❋ श्रीहँस--चतुश्श्लोकी ❋

श्रीकृष्णरूपं रुचिरं वरेण्यं
विरञ्चिहेतोश्च धृतावतारम् ।
सनत्कुमारार्थकृतोपदेशं
हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥१॥

जगत्स्रष्टा ब्रह्मा के मानस पुत्र महर्षि श्रीसनकादिक जिनके द्वारा आत्म-परमात्मतत्त्व परक गम्भीर प्रश्न किये जाने पर प्रश्न के समाधान में निमग्न श्रीब्रह्मा के निमित्त एवं श्रीसनकादिकों के प्रश्न-जिज्ञासार्थ सर्वनियन्ता सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने ही श्रीहँस भगवान् के स्वरूप में अवतार धारण कर महर्षियों के प्रश्न का समाधान किया, ऐसे उन श्रीहँस भगवान् की हम हृदय से भावना करते हैं ॥१॥

दिव्यस्वरूपं शुभशुभ्ररूपं
कारुण्य-लावण्य-रसैकधाम ।
भवाऽच्छबीजं भवसिन्धुसेतुं
हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥२॥

जिनका परम मङ्गलमय धवल दिव्य स्वरूप है, करुणा, मधुरता और रस अर्थात् आनन्द के धाम हैं इस चराचरात्मक सम्पूर्ण जगत् के श्रेष्ठ कारणरूप हैं, भवसागर से उद्धार के सेतुरूप एकमात्र परमाधार हैं ऐसे उन श्रीहँस भगवान् की अपने अन्तःकरण से अभिवन्दना करते हैं ॥२॥

सर्वेश्वरं कृष्णसुरूपमाद्यं
सनत्कुमारादिकसेव्यमानम् ।
वेदान्त-राद्धान्तमनोज्ञबीजं
हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥३॥

समस्त वेदान्तादि सिद्धान्त के एकमात्र कारुण्य पावन परमाधार, इस अखिल ब्रह्माण्ड के आदिरूप कृष्णस्वरूप सर्वेश्वर श्रीहंस भगवान् को अपने अन्तर्मानस से भावना पूर्वक प्रणति अर्पित करते हैं ॥३॥

अतीवरम्ये भुवि पुष्करे च
धृतावतारं जगतो हिताय ।
शास्त्रे प्रसिद्धं तमचिन्त्यरूपं
हंसावतारं हृदि भावयेऽहम् ॥४॥

इस भूमण्डल पर श्रीब्रह्मदेव का दिव्य क्षेत्र परम पावनतम अतीव रमणीय युगादि-तीर्थगुरु श्रीपुष्कर में जिन्होंने लोक कल्याण के लिये हंसस्वरूप अवतार धारण किया जो यथार्थ में परम अनिर्वचनीय अचिन्त्यरूपात्मक है जिसका वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराणादि शास्त्रों में सुप्रसिद्ध सुन्दर वर्णन है ऐसे उन श्रीहंस भगवान् की अपने हृदय-मन्दिर में हम भक्तिपूर्ण भावना करते हैं ॥४॥

हंसभगवतो दिव्या चतुश्श्लोकी सुखप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥५॥

श्रीहंस भगवान् की यह दिव्यस्वरूपा चतुश्श्लोकी जो परमानन्द प्रदान करने वाली है और जिसकी रचना उन्हीं की कृपा से हमें निमित्त बना कर यथामति बन पड़ी है । भावुकजन इसका अवश्य मनन करें ॥५॥

❋ श्रीसनकादि--चतुश्श्लोकी ❋

श्रीब्रह्मपुत्राँश्च महर्षि भागा-
न्सर्वेश्वराऽर्चा-श्रुतिशास्त्रशीलान् ।
गोपालमन्त्रार्थविधानदक्षा-
न्स्वान्ते भजे श्रीसनकादिवर्यान् ॥१॥

वेदादि शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित भगवदीय-सत्सङ्ग चर्चा में एवं शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्यार्चना में सर्वदा अभिरत, जगत् रचयिता श्रीब्रह्मा के मानस पुत्र महर्षिवर्य सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार जो श्रीगोपालमन्त्रराज का अर्थाभिव्यक्ति पूर्वक उसका सम्यक् विधान का सम्पादन करने में जो परम कुशल हैं, ऐसे उन चतुः श्रीसनकादि महर्षियों का हम अपने अन्तर्मन में भजन आराधन करते हैं ॥१॥

सदा त्रिलोक्यां नितरामटन्तो-
राधामुकुन्दाऽङ्घ्रिकथाप्रवृत्तान् ।
चतुर्वयस्कान्सुपुरातनाँश्च-
स्वान्ते भजे श्रीसनकादिवर्यान् ॥२॥

जो अपनी अव्याहत गति से समस्त लोक-लोकान्तरों में विचरण परायण हैं । वृन्दावन-गोलोकविहारी युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण के चरणकमलों की अमित महिमा परक कथा-सत्सङ्ग सुधा का ही जो अनवरत पान करते हैं और जो सकल सृष्टि के आदि अति प्राचीनतम महर्षि रूप चतुर्वर्षीय आयु से परम सुशोभित नवनवायमान दिव्य स्वरूप श्रीसनकादिकों का हम अपने हृदय स्थल में सतत अनुसन्धान पूर्वक भजन स्मरण करते हैं ॥२॥

नित्यं ऋषेर्नारदपूज्यवर्य-
स्याऽऽचार्यपादान्भुवने प्रसिद्धान् ।

श्रीमत्कुमारान्व्रजकुञ्जरम्या-
न्स्वान्ते भजे श्रीसनकादिवर्यान् ॥३॥

जो श्रीहरि चित्त स्वरूप देवर्षिवर्य श्रीनारद के मन्त्रोपदेशक आचार्य रूप में समस्त ब्रह्माण्ड में परम प्रख्यात हैं । इस भूतल पर व्रज वृन्दावनधाम की मञ्जुल-कुञ्जों में श्रीयुगलकिशोर भगवान् श्रीराधाविहारी की दिव्य उपासना में सदा अभिरत रहते हैं, ऐसे महर्षिवर्य श्रीसनकादि महाभागों का अपने अन्तःकरण में समग्रविधा उनका ध्यान, भजन, चिन्तन करते हैं ॥३॥

परात्परब्रह्मविचारमग्ना-
न्भवाम्बुधि-क्लेशनिवारकान्नः ।
कारुण्यकोषानिह भूतले च
स्वान्ते भजे श्रीसनकादिवर्यान् ॥४॥

जगन्नियन्ता सर्वान्तरात्मा परात्परतत्त्व रस परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर के ही चिन्तन अनुस्मरण में ही सर्वदा तल्लीन रहने वाले और भूतल पर भीषण भवार्णव के नानाविध तापों के निवारण करने में प्रतिपल तत्पर करुणावरुणालय श्रीसनकादि महर्षिवर्य का अपने चित्त में अनुसन्धान पूर्वक भजन करते हैं ॥४॥

सनकादि-चतुश्श्लोकी भक्ताऽभीष्टप्रदायिनी ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥५॥

रसिक भक्तों को अभिलषित मनोरथों को प्रदान करने वाली इस श्रीसनकादि-चतुश्श्लोकी की उन्हीं महर्षिवृन्दों की कृपाजन्य रचना हुई जो नित्य पठनीय है ॥५॥

❋ श्रीदेवर्षि--चतुश्श्लोकी ❋

वीणाकराम्भोज -- सुशोभमानं
गोविन्दनामानि सदोच्चरन्तम् ।
नित्यं प्रसन्नं हरिचित्तरूपं-
ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥१॥

अपने करकमलों में सदा सर्वदा वीणा को धारण करने से जो परम शोभायमान है तथा प्रतिपल श्रीगोविन्द के मनोहर मधुर नामों का अपनी मञ्जुल स्वरलहरी से गायन करते हुए सतत प्रसन्न, श्रीहरि के मन-रूप देवर्षिवर श्रीनारदजी का समाश्रय पूर्वक स्मरण नमन करते हैं ॥१॥

भवाटवीतापनिरासदक्षं
कारुण्यपूर्णं हरिभक्तिलीनम् ।
आर्ताऽऽर्तिपुञ्जाऽऽहरणे वरेण्य-
ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥२॥

इस भवारण्य के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों के निवारण करने में अतीव चतुर करुणास्वरूप सर्वेश्वर श्रीहरि राधामाधव की पराभक्ति में निरन्तर संलग्न और दुःखीजनों के नानाविध दुःखों के परिशमन में परम श्रेष्ठ देवर्षिवर्य श्रीनारदजी का परम अवलम्ब और स्मरण ही एकमात्र आधार है ॥२॥

निम्बार्कदीक्षागुरुमर्चनीयं
श्रीभक्तिसूत्राऽद्भुतसृष्टिकारम् ।
सङ्गीतशास्त्राऽग्रमहाप्रसिद्ध-
ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥३॥

सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों के दीक्षा गुरु श्रीगोपालमन्त्रोपदेशक जो परम वन्दनीय समर्चनीय हैं । सङ्गीतशास्त्र के महा-मर्मज्ञता और सर्वाग्रगण्यता में जो अतिशय प्रसिद्ध हैं । नारदभक्तिसूत्र एवं नारद-पाञ्चरात्र के रचयिता एवं उसमें जो दिव्यतम अद्भुत रसवृष्टि कर रससुधासिन्धु को आपूरित किया है, वस्तुतः वह अवर्णनीय है, ऐसे परम देवर्षिवर श्रीनारदजी की प्रपन्नता प्राप्त कर उनका चिन्तन ही जीवन का सार सर्वस्व है ॥३॥

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जधाम्नि
सखीस्वरूपेण विराजमानम् ।
राधानिकुञ्जेशपदाब्जभृङ्ग-
मृषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥४॥

श्रीवृन्दावन के नित्यनिकुञ्जधाम में जो नित्य सहचरी सखीरूप से सुशोभित हैं, श्रीराधानिकुञ्जविहारी के श्रीयुगलचरणाम्भोजरज के दिव्य भृङ्ग रूप में पुलकायमान देवर्षिवर श्रीनारदजी की प्रपत्ति ही एकमात्र अवलम्ब है ॥४॥

श्रीदेवर्षि-चतुश्श्लोकी रसभक्तिप्रदायिका ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥५॥

श्रीयुगलरसभक्ति प्रदायक श्रीदेवर्षि चतुश्श्लोकी जिसका प्रणयन उन्हीं की कृपाजन्य हुई है यथार्थ में यह उन्हीं देवर्षिवर का कृपाप्रसाद है ॥५॥

❋ श्रीनिम्बार्क--वन्दनाष्टकम् ❋

श्रुत्यर्थसाराम्बुधि-दिव्यपोतं
श्रीब्रह्मसूत्रार्थविकासभासम् ।
गीतार्थवाक्यार्थसुवृष्टिकारं
निम्बार्कमादित्यकरं भजेऽहम् ॥१॥

उपनिषत्-मन्त्र समूह के सार-सिन्धु में अवगाहन के लिये दिव्य पोत अर्थात् जहाज रूप (आधार रूप) ब्रह्मसूत्र पर जिन्होंने वेदान्त पारिजात सौरभम् नामक वृत्त्यात्मक सुप्रसिद्ध भाष्य की रचना करने की अनुकम्पा की है और इसी प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता पर भी गीतावाक्यार्थ भाष्य का प्रणयन किया (जो दुर्भाग्य से अप्राप्य है) ऐसे आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् सूर्यवत् प्रभायुक्त उनका सर्वात्मना भजन करते हैं ॥१॥

चक्रावतारं मधुसूदनस्य
निम्बार्करूपं भुवि सुप्रसिद्धम् ।
आचार्यवर्यं व्रजधामवासं
देवर्षिशिष्यं नितरां नमामि ॥२॥

भगवान् श्रीकृष्ण के करकमलों में सर्वदा परम सुशोभित चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार और इस समस्त भूमण्डल पर जो श्रीनिम्बार्क रूप से सुविख्यात है । व्रजधाम में सदा विराजित, देवर्षिवर्य श्रीनारदजी के परमशिष्य आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को सर्वविधा अभिनमन करते हैं ॥२॥

निम्बार्कमालोकसुमञ्जुपुञ्जं
सर्वेश्वराऽऽराधननित्यलीनम् ।
राधापदाम्भोजसुगन्धभृङ्गं
स्वान्ते स्वकीये सततं स्मरामि ॥३॥

श्रीसनकादिसंसेवित गुञ्जाफलसम सूक्ष्मविग्रह रूप शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर जिनकी सेवा अपने गुरुवर्य देवर्षि श्रीनारद से जिन्होंने प्राप्त की उनके मङ्गलमयी समाराधना में सतत अनुरक्त, वृन्दावनाधीश्वरी कृष्णप्रिया श्रीराधा सर्वेश्वरी के श्रीयुगलचरणाम्भोज की दिव्य सुगन्धि उसके समुपासक भृङ्ग रूप श्रीनिम्बार्क भगवान् उनकी अपने अन्तःकरण से निरन्तर वन्दना करते हैं ॥३॥

वेदान्त-सिद्धान्तसमस्तसार-
रहस्यविज्ञं युगकेलिमग्नम् ।
राधामुकुन्दाऽङ्घ्रिसरोजभक्ति-
प्रदायकं निम्बरविं भजामि ॥४॥

समग्र वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त का जो समस्त सारतत्त्व है उसके वास्तविक रहस्य के परम मर्मज्ञ वृन्दावननिकुञ्जविहारी श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण की रहस्यमयी निकुञ्जलीला के ध्यान में अभिरत और उन्हीं युगलकिशोर श्रीराधामुकुन्द की श्रीयुगलचरणकमल की रसभक्ति को प्रदान करने में तत्पर ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं ॥४॥

गोदावरीकूलधृतावतारं
लसत्तुलस्या शुभमाल्यकण्ठम् ।
आचार्यवर्यं हरिचक्रराजं
निम्बार्कमाद्यं मनसा स्मरामि ॥५॥

भारतवर्ष के दक्षिणाञ्चल भूभाग पर गोदावरी-गंगा पावनतटवर्ती पैठन निकटस्थ मूंगी ग्राम के अरुणाश्रम में माता जयन्ती पिता श्रीअरुण महर्षि के यहाँ जिन सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् ने नियमानन्द के रूप में अवतार धारण किया । जिनके कण्ठप्रदेश में तुलसी की कण्ठी परम कमनीय सुशोभित है, ऐसे श्रीहरि चक्रावतार आद्याचार्यवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का अपने अन्तर्मन से स्मरण करते हैं ॥५॥

व्रजस्थगोवर्धनसन्निधाने
निम्बाश्रमग्रामतपोवने च ।
निम्बार्कमाचार्यवरेण्यरूपं
नमामि साष्टाङ्ग विधानतोऽहम् ॥६॥

व्रज की दिव्य धरा पर अति कमनीय गिरिराज श्रीगोवर्धन के अति समीप निम्बाश्रम-तपोवन (निम्बग्राम-तपःस्थली) पर सुन्दर स्वरूप से नित्य विराजित आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को शास्त्र विधान पूर्वक साष्टाङ्ग-प्रणाम समर्पित करते हैं ॥६॥

श्रीचन्दनेनाऽङ्कित भालदेशं
सदा रतं वैष्णवताप्रचारे ।
कृपैकधाम श्रुतिशास्त्रधीरं
निम्बार्कमीशं हृदि भावयामि ॥७॥

गोपीचन्दन के ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक से जिनका सुन्दर भव्य ललाट परम प्रकाशमान है और वैष्णवता के प्रचार-प्रसार में सदा अभिनिरत, श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि समग्रशास्त्रों के परम मेधावी, कृपा के धाम श्रीनिम्बार्क भगवान् की मङ्गलमयी भावना अपने हृदय में करते हैं ॥७॥

सामीप्यमुक्तीश्वर-भक्तिदान-
परायणं निम्बदिनेशरूपम् ।
नित्यं शरण्यं सुख-शान्तिकार-
माचार्यवर्यं प्रणमामि शश्वत् ॥८॥

भगवद्भावापत्तिरूप सामीप्य मोक्ष एवं श्रीराधा-सर्वेश्वर की दिव्य पराभक्ति प्रदान करने वाले, परम सुख और अविचल शान्ति के प्रदाता एकमात्र सदा परम शरण्य आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के श्रीचरणारविन्दों में निरन्तर सश्रद्ध कोटि-कोटि साष्टाङ्ग प्रणाम समर्पित करते हैं ॥८॥

सर्वेश्वरप्रदं स्तोत्रं निम्बार्कवन्दनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

श्रीसर्वेश्वर प्रभु का कृपाप्रसाद देने वाला यह श्रीनिम्बार्कवन्दनाष्टक स्तोत्र उन्हीं श्रीनिम्बार्क भगवान् के मङ्गल अनुग्रह से उन्हीं की सेवा में प्रस्तुत है ॥९॥

❋ श्रीश्रीनिवासाचार्य-चतुश्श्लोकी ❋

शंखावतारं मुरलीधरस्य
कृष्णस्य वृन्दावनमोहनस्य ।
निम्बार्कशिष्यं बुधवृन्दसेव्यं
श्रीश्रीनिवासं मनसा स्मरामि ॥१॥

सर्वेश्वर वृन्दावनमोहन मुरलीधर भगवान् श्रीकृष्ण के करारविन्द में जो नित्य सुशोभित पाञ्जजन्य शंख उसी के आप अवतार हैं, सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्यप्रवर श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के पट्टशिष्य श्रेष्ठ महामनीषियों द्वारा संसेवित श्री श्रीनिवासाचार्य परमाचार्यवर्य का अपने मानस में नित्य स्मरण करते हैं ॥१॥

निम्बार्क-वेदान्तसुभाष्यकारं
पुरातनाचार्यमसीमरूपम् ।
विरुद्ध-सिद्धान्तनिरोधदक्षं
श्रीश्रीनिवासं मनसा स्मरामि ॥२॥

निम्बार्क वेदान्त दर्शन पर वेदान्त कौस्तुभ नामक वृहद्-भाष्य के रचयिता जो अत्यन्त प्राचीनतम आचार्यस्वरूप हैं । आपका दिव्य सुभग स्वरूप है । जो अनादि-सनातन वैदिक वैष्णव सिद्धान्त जिसके विपरीत जो भी सिद्धान्त हैं उनके खण्डनात्मक समाधान करने में अतीव प्रवीण हैं उन आचार्य-प्रवर श्रीश्रीनिवासाचार्यचरणों का स्वकीय अन्तर्हृदय में अविरल स्मरण करते हैं ॥२॥

दिव्यप्रभावं श्रुतिशास्त्रविज्ञं
राधाहृषीकेशपदाब्जकामम् ।
वृन्दावनश्रीरसबोधकारं
श्रीश्रीनिवासं मनसा स्मरामि ॥३॥

जिनका सर्वत्र परमदिव्य प्रबल प्रभाव है, श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि समस्त शास्त्रों के परमनिष्णात महामनीषी, भगवान् श्रीराधाकृष्ण के युगलचरणारविन्दों में निरन्तर उत्कण्ठा अभिरत, वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रियाजी की रसभक्ति के ही चिन्तन में प्रतिपल निरत श्रीश्रीनिवासाचार्य श्री का अपने निर्मल चित्त से स्मरण ध्यान करते हैं ॥३॥

व्रजे सुरम्ये गिरिराजमध्ये
विराजमानं ललितासुकुण्डे ।
कुञ्जे लता-पादपपुष्पपुञ्जे
श्रीश्रीनिवासं मनसा स्मरामि ॥४॥

नानाविध लताद्रुमावलियों के मनोरम कुञ्जों से अतिकमनीय व्रजधाम के परम रमणीय गिरिराज श्रीगोवर्धनस्थित-ललिता कुण्ड पर परम शोभायमान आचार्यवर्य श्रीश्रीनिवासाचार्य श्रीचरणों का भक्तिपूर्वक हृदय से पुनः पुनः स्मरण-चिन्तन करते हैं ॥४॥

श्रीनिवास-चतुश्श्लोकी भक्ताऽऽमोदप्रदायिनी ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥५॥

रसिक भगवद्भक्तों को परमानन्द प्रदान करने वाली श्रीनिवास-चतुश्श्लोकी की रचना इन्हीं आचार्यश्री के अनुग्रह-प्रसाद से संभव हुई है ॥५॥

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ़-अजमेर (राज०)

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क-मुद्रणालय
निंम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
जि० अजमेर (राज०)

न्यौछावर-
दो रुपये